प्रेस विज्ञप्ति (अनुवादकः समान्ता खन्ना)
अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष की अन्वेषण संस्था - हाईडलबर्ग
हाईडलबर्ग, १२ मार्च २०१५

हाईदलबर्ग की अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष की अन्वेषण संस्था इस "संघर्ष बैरोमीटर" के द्वारा दुनिया के तमाम संघर्षों संबंधित अपने वर्तमान आँकड़े और विश्लेषण प्रस्तुत करती है।
अपनी कार्याप्रणाली के अनुसार वर्ष २०१४ में कुल मिलाकर ४२४ संघर्ष दुनिया भर में निर्धारित किए गये जिनमें से ४६ संघर्ष भारी संघठित हिंसा प्रयोग और उसके तीव्र परिणामों के कारण से "अति-हिंसक" वर्गीकरण किये गये । इन ४६ संघर्षों में से २१ ऐसे थे जिन्होंने युद्ध का सर्वोच्च प्रबलता स्तर हासिल किया है। उन २० युदधों की तुलना में जो २०१३ में निरीक्षीत किये गये थे २०१४ के ये २१ संघर्ष ज़्यादा राष्ट्रों में वितरित थे।

२००८ के बाद अब पहली बार यूरोप युद्ध क्षेत्र के रूप में प्रकट हुआ, जब कीव के मैदान-विरोधों की वजह से यूक्रेन में परिस्थितियां ज़्यादा तनावपूर्ण होती गयीं और देश के पूरब में नयी सरकार और विभिन्न नागरिक सेनाओं के बीच अति-हिंसक संघर्ष शुरू हुए। अनवेषकों ने अम्रीका और एशिया में भी प्रतियेक युद्ध अवलोकन किया। पिछले वर्ष की तरह सब से ज़्यादा युद्ध मध्य पूर्व, मग़रिबी एशिया (९) और उप अफ़्रीका(९) में लड़े गये। एक तरफ़ मध्य पूर्व और मग़रिबी एशिया में तीन अन्य युद्धों के साथ कुल युद्धों की संख्या में वृद्धि हुई, दूसरी तरफ़ उप अफ़्रीका में दो युद्धों की कमी हुई। यूरोप के बाहर पराराज्य हिंसक उग्रवादियों ने अपने इलाक़ों में अक्सर युद्ध की दिशा का निर्धारण किया। अपने कार्य और लक्ष्य के अनुसार वे राज्य ढांचों से दूर होते गये और इस लिये सीमापार हिंसक संघर्षों के विस्तार में वे प्रभावी थे। स्पष्ट रूप से यह विकास उन संघर्षों में नज़र आया जहां बहुत उग्रवादी दल शामिल थे जैसे कि मध्य पूर्व के ISIS में या मग़रिबी अफ़्रीका के बोको हराम में।

२०१४ में बोको हराम के आक्रमण सिर्फ नाइजीरिया के उत्तर पूर्वी इलाक़ों में सीमित नहीं थे बलकि इस दल ने कैमेरून और नाइजर के कई इलाकों को अपने वारों का निशाना बनाया। क्योंकि वर्ष २०१४ में हताहतों की संख्या कम से कम दस हज़ार और शरणार्थियों की संख्या दस लाख से भी ऊपर थी, यह वर्ष इस संघर्ष के लिए, जो २००९ से चालू है, सब से हिंसात्मक मालूम हुआ। इस के अलावा नाईजेरिया के मिडल बेल्ट में किसानों और चरवाहों के बीच में संघर्षों के परिणाम के रूप में २५०० से अधिक लोग मारे गये और ३ लाख से अधिक लोग निर्वासित हो गये। कांगो के पूर्व हिस्सों में कांगो और युगांडा के सरकारों और एलाइड डेमोक्रेटिक फोर्सेज (ए.डि.एफ.; विद्रोही दल) के बीच हिंसक संघर्ष के कारण लगभघ एक हज़ार लोगों की हत्या हो गई, इस लिये अन्वेषकों का कहना है कि इस संघर्ष ने युद्ध के स्तर को ग्रहण किया है।

मध्य अफ़्रीकी गणराज्य में भूतपूर्व सेलेका-अलायंस और ऐंती-बलका-समूहों के बीच जो संग्राम था,

वह एक संक्रमणकालीन सरकार की स्थापना के बाद भी चालू रहा। अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति को बढ़ाने के लिये लगभग १२ हज़ार सैनिक संयुक्त राष्ट्र के एक मिशन के द्वारा उपलब्ध किये गये, साथ ही यूरोपीय संघ ने १ हज़ार सैनिकों को बंगूई नामक राजधानी की सुरक्षा के लिये तैनात किया। सोमालिया की केंद्र सरकार AMISOM और कुछ स्थानीय नागरिक सेनाओं की मदद से कई शहरों को अल-शबाब नामक इस्लामवादी सेना के क़ब्ज़े से छुड़ाने में और उन पर नियंत्रण प्राप्त करने में सफल हुई। जहां दक्षिण सूदान में प्रधानमंत्री सलवा कीर और पूर्व उपाध्यक्ष रीक माचर के सैनिकों के संघर्ष के परीणाम में १० हज़ार से अधिक लोग मारे गये, वहां स□ सूदान में पिछले वर्षों की तरह तीन युद्ध घ□ित हुए।

मग़रिब और मध्य पूर्व में सीरिया के गृहयुद्ध ने एक नया स्तर प्राप्त किया जब IS नामक संगठन ने खिलाफ़त की बुनियाद डालने की घोषणा की। इस संगठन ने सिर्फ़ सीरिया की सरकार से विरोध नहीं किया बलकि इस के अलावा सीरिया के विपक्षी दलों और उत्तर इलाक़ों में रहने वाले कुरदी लोगों से भी युद्ध आरंभ किया। स□ हुए इराक़ में, जहां IS देश के पश्चिमी और उत्तरपश्चिमी इलाक़ों को अपने कब्ज़े में लाने में सफल रहा, वहीं सरकार और कुरदी प्रादेशिक सरकार इसके प्रतिरोध में असफल रह गईं। IS को दोनो देशों में अंतर्राष्ट्रीय सामारिक गठबंधन का सामना करना परा। इस गठबंधन की अगुआई अम्रीका के हाथ में थी।

लीबिया में सरकार और विपक्षी दलों के बीच में हिंसक संघर्ष तीव्रपूर्ण होते चले गये, जिस्से देश के वास्तविक विभाजन को उत्पन्न हुआ। गाज़ा में भी विपक्ष दलों के बीच हिंसक संगर्षों ने "प्रो□क्□व एज" नामक अभियान के दौरान युद्ध के दरजे को प्राप्त किया। यमन का स्थित संघर्ष भी अधिक तीव्र रूप में स्पष□ हुआ जब अल-हूथी नामक दल के सैनिक राजधानी साना तक आगे बढ़ पाये।
अफ़ग़ानिस्तान में ISAF की मिशन १३ वर्षों बाद समाप्त हुई, यद्यपि तालिबान के विरुद्ध युद्ध अभी तक चालू है। स□ पाकिस्तान में भी तहरीक-ए-तालिबान और पाकिस्तानी सरकार के बीच युद्ध २०१४ में चालू रहा। इस युद्ध के सबसे संक□मय हमले कराची और पेशावर में घ□ित हुए। पाकिस्तान और भारत के दरमियान संघर्ष अति-हिंसक रूप में स्पष□ हुआ जब जम्मू के सीमावर्ती क्षेत्रों में गंभीर मार□र हमलों के कारण २० हज़ार से ज़्यादा लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े।

यूक्रेन के पश्चिम इलाक़ों में विपक्ष संघर्ष के कारण फ़रवरी में राज्य-विप्लव हुआ। इसका परिणाम यह था कि अनुवर्ती संघर्षों की संख्या बड़ी। उन संघर्षों के दौरान देश के दक्षिण और पूर्व हिस्सों की परिस्थितियां अस्थिर होती गयी। उस युद्ध के दौरान, जो सरकार और विभिन्न विरोधी दलों के भीतर ओहदे और दोमबास के संसाधन के चक्कर में लड़ा गया, ४८०० लोग मारे गये और १२ लाख से भी अधिक लोग बेघर हो गये।
पिछले वर्ष की तरह, मैक्सीको में जो सरकार और औषधि-उत्पादक-संघ के बीच युद्ध चालू था, केवल एक ही ऐसा युद्ध था जो वैचारिक तर्क या सियासी सत्ता के लिये नही बलकि आर्थिक लाभ प्राप्त करने के चक्कर में ज़ारी रहा। शरद में सरकार के प्रतिकूल हिंसात्मक विरोध अवलोकित हुए

थे। उन विरोधों का अवसर यह था कि पुलीस ने कई विरोधी विद्यार्थियों का अपहरण किया और उनको औषिधि-उत्पादक संघ के हवाले कर दिया था। मैक्सीको, दक्षिण और मध्य अम्रीका में कुल मिलाकर नौ हिंसक संघर्ष अवेक्षित किए गये जिनमें अनुचित संगठन मिले हुए थे। पिछले वर्ष की तरह २०१४ में भी यह संघर्ष जो मैक्सीको और कोलंबिया के ऐसे अनुचित संगठनों के बीच पाये गये "अति-हिंसक" संघर्ष के रूप में नज़र आये।

HIIKके अन्वेषकों ने एक ही अंतर्रष्ट्रीय अति-हिंसक संघर्ष अवेक्षित किया जो पाकिस्तान और भारत के दरमियान जारी रहा। इसके अलावा दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय संकट घटित हुए, जिनमें से ११ हिंसक थे।
यूक्रेन के संघर्ष और क्रिम को कब्ज़े में लाने की वजह से सबसे तनावपूर्ण संकट एक तरफ़ रूस और दूसरी तरफ़ अम्रीका, NATO और EU के भीतर पाया गया। अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष भूखंड के बिषय में चीन और उसके पड़ोसी देशों, जैसे भारत, जपान, वियतनाम और फिलिपीन्स, के भीतर अवेक्षित किए गये। ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के बारंबार विषय थेः भूखंड (५०), अंतर्राष्ट्रीय सियासी सत्ता (३५), प्राकृतिक संसाधन, मछली पकड़ने के आधार और पानी।
इसके अतिरिक्त HIIK के अन्वेषकों ने वर्ष २०१४ में १६६ मध्य हिंसक प्रबलता के अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष दर्ज़ किए, जिनमें से ३८ प्राकृतिक संसाधन की वजह से, ४० पार्थक्य या स्वायत्तता हासिल करने के लिये, और ११९ राष्ट्रिय सत्ता या स्यासी व्यवस्था को बदलने के लिए लड़े गये। उत्तरवर्ती संघर्ष में सामाजिक आंदोलनों का बड़ा हाथ रहा था, विशेष रूप से बंगलादेश, ब्राज़ील, हांग-कांग, पाकिस्तान और वेनेज़ुएला में। मिस्र, बुकीना फासो और थाईलैंड में सैनिक बलों ने ऐसे संघर्षों में हस्तक्षेप किया था।

वर्ष १९९१ से HIIK दुनिया भर के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के अनुसंधान, प्रलेखन और मूल्यांकन करने के लिए समर्पित है। वार्षिक प्राकाहित होने वाले "संघर्ष बैरोमीटर" में वर्तमान हिंसक और अहिंसक संघर्षों के संक्षिप्त विवरण धारित होते हैं।

Contact: HIIK | Tel.: (+49) 6221 54 31 98 | Mail: info@hiik.de

सात्कारः

१२ मार्च २०१५, दोपहर १२ बजे से पहले इन आँकड़ों का प्रचार करना सख़्त मन्ना है! उस के बाद आप आधुनिकतम प्रकाशन को मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं (www.hiik.de)।

Board: Christopher Becker, Sven Eckstein, Jason Franz, Johannes Nickl, Stella Wancke
Bergheimer Straße 58 | 69115 Heidelberg | T+49 (6221) 54 31 98 | F +49 (6221) 542896 | info@hiik.de | www.hiik.de
bank details: Sparkasse Heidelberg | BLZ 672 500 20 | account 240 69 50
IBAN: DE71672500200002406950 | SWIFT-BIC: SOLADES1HDB | creditor-identifier: DE79HIK00000581032